साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 02
March 2015

मेहनत और जिन्दगी

हिमांशु हंसराज

सब गुणो का है आधार

परिश्राम लगातार

करते रहो मेहनत

हारो नही हिम्मत

रहो हमेशा प्रयासरत

जीत सकते हो जगत

करते रहो प्रयास सतत

है साहिल का विचार

मिले असफलता हअिसफलता

हर बार

या कहे बार-बार

फिर भी कोशिश करो एक बार

हिम्मत ना हारो मेरे यार

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 02
March 2015

सब गुणो का है आधार

परिश्रम लगातार

हिम्मत और मेहनत

है वो दो गुण

जिसके पास है प्यारे

वह कभी ना हारे

नही रतो हारे का हरि नाम

करो मेहनत सुबह-शाम

मै यह भी नही कहता

तु भी होगा सुनता

करते रहो दिन-रात काम

और न करो आराम

भूल जाओ करना प्यार

सब गुणो का आधार

परिश्रम लगातार

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 02
March 2015

काम तो करना होगा

तभी तो फल मिलेगा

मगर आराम इतना भी नही

कि तन-मन शिथिल पड़जाए

विस्तर पर पड़े-पड़े हम मर जाए

आराम बस इतना

कि मिट जाए थकान

आजाए नई मुस्कान